Dainik Bhaskar (Indore), 04th May 2024, Page - 04

आईआईटी इंदौर की खोज • डिजीज के अंश मिले तो रोकने के प्रयास करेंगे

35 से 40 की उम्र में एमआरआई से पता करेंगे अल्जाइमर का, एआई की मदद लेंगे

भास्कर संवाददाता | इंदौर

अल्जाइमर का 35 से 40 की उम्र में ही पता लगाने के लिए आईआईटी इंदौर की टीम ने एडवांस्ड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित सॉफ्टवेयर अल्गोरिथम बनाया है। इसके लिए किसी भी व्यक्ति को सालाना चेकअप में मस्तिष्क का एक बार एमआरआई स्कैन करवाना होगा। स्कैन से प्राप्त डाटा को इस एआई प्रोग्राम में डाला जाएगा और फिर उस व्यक्ति को तीन स्टेज में रखा जाएगा- स्वस्थ, माइल्ड कॉग्निटिव डिसऑर्डर और अल्जाइमर डिजीज। प्राप्त डाटा से अल्जाइमर होने की आशंका का पता चल जाएगा और फिर इसे रोकने के प्रयास किए जाएंगे।।

इस शोध का नेतृत्व प्रो. एम तनवीर कर रहे। उनका साथ दे रहे एनआईटी सिल्चर से डॉ. तृप्ति गोयल, आईआईटी इंदौर के छात्र डॉ. राहुल शर्मा और डॉ. अश्वनी कुमार मलिक। इसके अलावा विदेशी संस्थाओं में कनाडा के मैनिटोबा विवि से डॉ. ईमान बेहेश्टी, स्पेन के प्रो. जेवियर डेल सेर, कतर विवि से प्रो. पीएन सुगंथन और ऑस्ट्रेलिया के प्रोफेसर सीटी लिन रहे। यह शोध नेचर मेंटल हेल्थ जर्नल के साथ 8 अन्य अंतरराष्ट्रीय जर्नल में भी प्रकाशित हुआ।

जेनेटिक फार्मेशन की भी जांच की

प्रो. तनवीर ने बताया एआई अल्गोरिथम को तैयार करने में हम 8 साल से काम कर रहे। इसके लिए अल्जाइमर और बिना अल्जाइमर वाले लोगों का एमआरआई और पीईटी स्कैन डाटा इकट्ठा किया। युवाओं के एमआरआई स्कैन पर भी शोध किया, ताकि पता चल सके कि दिमाग में इस बीमारी के पहले और बाद में किस तरह के बदलाव आते हैं। व्यक्ति के जेनेटिक फार्मेशन और न्यूरो इमेजिंग को भी गहराई से जांचा गया।

अल्जाइमर का पता चलता तब तक देर हो चुकी होती-

प्रो. तनवीर ने बताया अल्जाइमर का पता 60-65 की आयु में चलता है और तब इसके सुधार का कोई मार्ग नहीं बचता, लेकिन यही डायग्नोसिस पहले हो जाए तो इस बीमारी को रोका जा सकता है।